चारित्र रथ चढ़ भये दूलह, जाय शिवरमणी वरी ।।

# चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव, कोटा

## वार, दिनांक 9 मई 2004 तक )

## प्रांगण, कॉमर्स कालेज रोड, तलबंडी, कोटा (राज.)

न बाबू जुगलकिशोरजी युगल के सान्निध्य में श्री नेमिनाथ दि. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा
वेत पाषाण से निर्मित भाववाही परमशांत 1008 श्री सीमन्धर भगवान की 61 ईंच की पद्मासन
आप सभी तत्त्वरसिक महानुभाव हमारा भावभीना आमंत्रण स्वीकार कर अवश्य पधारें।

### क कार्यक्रम

**य गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन**

रोहण, कलशस्थापना, पंचपरमेष्ठी विधान, इन्द्र प्रतिष्ठा शोभायात्रा,
क की पूर्व क्रिया, इन्द्रसभा-राजसभा, 16 स्वप्नों का प्रदर्शन
वियों की मार्मिक तत्त्वचर्चा।
त्य, 1008 कलशों से जन्माभिषेक, पालनाझूलन ।
की शोभायात्रा, दीक्षावन में वैराग्य प्रवचन ।
ध्वनि प्रसारण।
ी विराजमान, जिनवाणी स्थापना, कलशारोहण, शांतियज्ञ।

### प्रतिष्ठाचार्य

बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री

**निर्देशक** – बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री
पं. अशोककुमारजी लुहाड़िया

**सहयोगी** – पं. अभयकुमारजी शास्त्री
पं. रतनचंदजी शास्त्री कोटा
पं. संजयकुमारजी शास्त्री जेवर
पं. मनीषजी शास्त्री पिड़ावा

**कोषाध्यक्ष**
सुरेन्द्रकुमार जैन
मो. 9829035409

**संगठन मंत्री**
तेजमल जैन पटवारी
नि. (0744) 2424302

**स्वागताध्यक्ष**
राजेन्द्रकुमार बज
नि. (0744) 2381869

**सह-संयोजक**
नेमीचन्द अजमेरा
अविनाश जैन
माणकचन्द कासलीवाल
गंभीरमल जैन
चिन्मय जैन
वीरेन्द्रकुमार हरसौरा
राजमल जैन सर्राफ
महेन्द्रकुमार भिण्डी वाले
लाभचन्द पटवारी

शिक्षण केन्द्र ट्रस्ट, कोटा

नीत

*मुक्षु मण्डल, कोटा*  *वीर वनिता संघ, कोटा*

तत्त्वचर्चा

# प्रवचनसार का सार 4

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

यहाँ सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि शुद्धोपयोगी श्रमण और शुभोपयोगी श्रमण ह्न ऐसे दो प्रकार के साधु नहीं है। **साधु तो एक ही हैं; शुद्धोपयोग के काल में वे ही शुद्धोपयोगी हैं एवं शुभोपयोग के काल में; जब वे शिष्यों को पढ़ाते हैं, शास्त्र लिखते हैं, तब वे ही शुभोपयोगी होते हैं। छटवें–सातवें गुणस्थान में झूलनेवाले संत जब सातवें गुणस्थान में होते हैं, तब शुद्धोपयोगी और जब छटवें गुणस्थान में होते हैं, तब शुभोपयोगी होते हैं।**

परद्रव्यों से हटकर उपयोग का आत्मसन्मुख होना ही शुद्धोपयोग है।

**प्रश्न ह्न** यदि ऐसा है तो यहाँ शुद्धोपयोगी के स्वरूप में पदार्थों और सूत्रों को जाननेवाले ह्न ऐसा क्यों कहा है ?

पदार्थों एवं सूत्रों को अच्छी तरह जाननेवाले ह्न ऐसा कहकर आचार्य शुभोपयोग में जो जानने की प्रक्रिया है, उसे नहीं बता रहे हैं; अपितु यह बताया जा रहा है कि शुद्धोपयोगी वही होगा, जिसे तत्त्वार्थ का यथार्थ ज्ञान हो, यथार्थ श्रद्धान हो। यद्यपि **शुद्धोपयोग के काल में आस्रव का ज्ञान उपयोगरूप नहीं होता; तथापि आस्रव हेय हैं, आस्रव मैं नहीं हूँ ह्न ऐसा लब्धिरूप ज्ञान शुद्धोपयोग के काल में भी विद्यमान रहता है।**

अभी हम प्रवचनसार पढ़ रहे हैं तो इसकी विषयवस्तु में हमारा उपयोग लग रहा है। क्या इसी समय हमें समयसार का ज्ञान नहीं है ? यदि समयसार का ज्ञान है तो आत्मज्ञान क्यों नहीं है ?

हमारे लब्धिज्ञान में अभी जो भी उपलब्ध है, उन सबका ज्ञान हमें है। **लब्धि व उपयोग दोनों ही प्रगट पर्याय के ही नाम है। शक्ति का नाम लब्धि नहीं है।**

जब आत्मा आत्मानुभव कर रहा होता है; तब भी उसे सात तत्त्वों का ज्ञान उपलब्ध रहता है और जब वह पर का ज्ञान कर रहा है, तब भी उसे सात तत्त्वों का ज्ञान रहता है। जैसे खाता–पीता सम्यग्दृष्टि भी सम्यग्दृष्टि है और आत्मा का अनुभव करनेवाला सम्यग्दृष्टि भी सम्यग्दृष्टि है।

**भगवान आत्मा को सम्यक्तया जाना है, अनुभव में भी जाना है; किन्तु अभी अनुभव नहीं है तो भी आत्मज्ञान मौजूद है; ऐसा तत्त्वज्ञानी जीव शुद्धोपयोग का पात्र होता है।** इसका अर्थ यह नहीं है कि वह शुद्धोपयोगी है; परन्तु शुद्धोपयोग के लिए आवश्यक जो शर्त है, उसे वह पूर्ण करता है।

जिसप्रकार सम्यग्दर्शन के लिए आवश्यक शर्त के रूप में आचार्य समन्तभद्र ने देव–शास्त्र–गुरु की श्रद्धा को शामिल किया; उसीप्रकार कुन्दकुन्दाचार्य ने यहाँ तत्त्वार्थ को जाननेवाला ह्न यह शर्त शुद्धोपयोग के लिए रखी है।

शुद्धोपयोग के काल में भी उसे संपूर्ण पदार्थों को जानते रहना चाहिए, यदि नहीं जानेगा तो शुद्धोपयोगी नहीं कहलाएगा ह्न यह अर्थ उचित नहीं है। जानते रहना चाहिए ह्न ऐसी शर्त यहाँ कहाँ है ? शुद्धोपयोगी जानता ही है, बात तो यह है।

'यहाँ जानते रहना चाहिए' ह्न ऐसा कहनेवाले मात्र उपयोग के जानने को ही जानना मानते हैं; लब्धि का जो जानना है, वे उसे नहीं मानते हैं।

ऐसी चर्चा अनेक मुमुक्षु भी करते हैं। कहते हैं कि शुद्धोपयोग के काल में पर को जानना जरूरी नहीं है। वे ऐसा कहकर यही व्यक्त करते हैं कि वे मात्र उपयोग को ही जानना मानते हैं।

आचार्यदेव ने शुद्धोपयोगियों को संयम व तप से युक्त विगतरागी कहा है। यह भूमिकानुसार लेना। सातवें गुणस्थान में सातवें के योग्य राग से रहित हैं, आठवें गुणस्थान में आठवें के योग्य राग से रहित हैं, नौवे गुणस्थान में नौवे के योग्य राग से रहित हैं। जिस भी गुणस्थान में वे शुद्धोपयोगी हैं; उस गुणस्थान में जो राग होनेयोग्य नहीं है, वे उससे रहित हैं।

द्रव्यदृष्टि से तो राग से भिन्न होने के कारण निगोदिया भी राग से रहित हैं; परन्तु यहाँ ऐसा नहीं है, यहाँ पर्याय की मुख्यता से कथन है। इसीप्रकार संयम और तप को भी भूमिकानुसार घटित कर लेना चाहिए।

सुख–दुःख में समभावी विशेषण में आत्मिक सुख की बात नहीं है। सुख–दुःख अर्थात् अनुकूलता–प्रतिकूलता में जिसका साम्यभाव है ह्न ऐसे जीवों को शुद्धोपयोगी कहते हैं।

ऐसे शुद्धोपयोगी जीव ज्ञेयों के पार को पा लेते हैं ह्न यह बात 15वीं गाथा में कही है; जो इसप्रकार है ह्न

**उवओगविसुद्धो जो विगदावरणंतरायमोहरओ।**
**भूदो सयमेवादा जादि परं णेयभूदाणं ।।15।।**

( हरिगीत )

**शुद्धोपयोगी जीव जग में घात घातीकर्मरज।**
**स्वयं ही सर्वज्ञ हो सब ज्ञेय को हैं जानते ।।15।।**

शुद्धोपयोगी आत्मा स्वयं ही ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अन्तराय और मोह कर्मरज से रहित होकर ज्ञेयभूत पदार्थों के पार को प्राप्त होते हैं।

14 वीं एवं 15 वीं गाथा से आचार्यदेव अनंतसुख एवं ज्ञेयों के पार को प्राप्त करना ये दो महत्त्वपूर्ण तथ्य प्रस्तुत करते हैं; जो इस बात के प्रतीक हैं कि भविष्य में आचार्य ज्ञानाधिकार एवं सुखाधिकार लिखेंगे; जिसमें वे अतीन्द्रिय ज्ञान व अतीन्द्रिय सुख का स्वरूप समझायेंगे। वे अतीन्द्रिय सुख एवं अतीन्द्रिय ज्ञान शुद्धोपयोग के फल हैं एवं वह शुद्धोपयोग ही साक्षात्चारित्र है, वही धर्म है।

वे यहाँ अतीन्द्रिय आनंद अतीन्द्रिय ज्ञान को स्पष्ट करने के लिए कहते हैं कि ज्ञान एवं सुख दो–दो प्रकार के हैं ह्न (1) इन्द्रिय सुख (2) अतीन्द्रिय सुख एवं 1. इन्द्रिय ज्ञान 2. अतीन्द्रिय ज्ञान।

अतीन्द्रिय ज्ञानवालों को अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति होती है एवं इन्द्रिय ज्ञानवालों को इन्द्रिय सुख की प्राप्ति होती है। अत: अतीन्द्रिय ज्ञान उपादेय है एवं इन्द्रियज्ञान हेय है।

अब आचार्य 16वीं गाथा लिखते हैं, जो बहुत प्रसिद्ध है एवं जिसे स्वयंभू की गाथा कहा जाता है।

**तह सो लद्धसहावो, सव्वण्हू सव्वलोगपदिमहिदो।**
**भूदो सयमेवादा, हवदि सयंभु त्ति णिद्दिट्ठो ।।16।।**

( हरिगीत )

**त्रैलोक्य अधिपति पूज्य लब्धस्वभाव अर सर्वज्ञ जिन।**
**स्वयं ही हो गये तातैं स्वयम्भू सब जन कहें ।।16।।**

इसप्रकार अपने स्वभाव को प्राप्त कर वह आत्मा स्वयं ही सर्वज्ञ तथा त्रैलोक्यपूज्य हुआ होने से स्वयंभू है, ऐसा जिनेन्द्र भगवान कहते हैं।

लोकव्यवहार में नेताओं के लिए भी यह विशेषण लगाया जाता है। स्वयंभू नेता का अर्थ यह है कि वह जन्मजात नेता है, उसे किसी ने नेता नहीं बनाया है।

जैसे कहा जाता है कि – जंगल में सिंह को राजतिलक किसने किया? '**मृगेन्द्रस्य मृगेन्द्रत्वं वितीर्ण: केन कानने**' क्षत्रचूड़ामणि के इस वाक्य से स्पष्ट है कि मृगेन्द्र के लिए जंगल का आधिपत्य किसी ने सौंपा नहीं है, उसने उसे अपने पुरुषार्थ से प्राप्त किया है। अपने पुरुषार्थ से उसने ऐसा आतंक पैदा कर दिया कि एक-एक जानवर उसकी आवाज सुनकर भयभीत हो जाता है। यही कारण है कि उसे जंगल का स्वयंभू राजा कहा जाता है।

ऐसे ही इस आत्मा ने शुद्धोपयोग के द्वारा स्वयं अपने आत्मा की आराधना कर स्वयं ही अतीन्द्रिय सुख व अतीन्द्रिय अनंतज्ञान अर्थात् केवलज्ञान की प्राप्ति की है; इसलिए यह आत्मा स्वयंभू है।

इस स्वयंभूवाली गाथा की चर्चा सर्वाधिक होती है; क्योंकि इसमें यह कहा गया है कि **भगवान आत्मा का जो निर्मल परिणमन है अथवा उन्होंने जो अनंतसुख की प्राप्ति की है, अतीन्द्रियज्ञान को प्राप्त किया है; उसकी प्राप्ति किसी दूसरे के आश्रय से नहीं होती, किसी दूसरे की कृपा से नहीं होती, दूसरे के आशीर्वाद से नहीं होती; उसमें पर के सहयोग की रंचमात्र भी आवश्यकता नहीं है।**

सम्यग्दर्शन की प्राप्ति तो देशनालब्धि के बिना नहीं होती ह्न ऐसी स्थिति में यह कैसे कहा जा सकता है ?

आचार्य कहते हैं कि सम्यग्दर्शनादि जिसे प्राप्त होंगे; उसके पूर्व उन्हें देशनालब्धि अवश्य प्राप्त होगी। **सम्यग्दर्शनादि देशनालब्धि के पराधीन नहीं है, देशनालब्धि तो सम्यग्दर्शनादि प्राप्ति के अंतर्गत आनेवाली प्रक्रिया है। वह प्रक्रिया कैसे सम्पन्न होगी ? ऐसा प्रश्न हो सकता है; परन्तु इससे पराधीनता उपजती है ह्न यह सोचना ठीक नहीं है।**

केवलज्ञान का कर्ता कौन है ?

आत्मा।

यह केवलज्ञान किसका कर्म (कार्य) है ?

स्वयं आत्मा का।

इस आत्मा ने किस साधन से यह केवलज्ञान प्राप्त किया ?

शुद्धोपयोग अर्थात् स्वयं के द्वारा ही इस आत्मा ने केवलज्ञान प्राप्त किया है।

यह प्राप्त केवलज्ञान इस आत्मा ने किसे दिया ?

स्वयं को।

यह केवलज्ञान कहाँ से आया ?

स्वयं में से ही आया है।

किसके आधार से इस आत्मा ने केवलज्ञान प्राप्त किया है ?

स्वयं के आधार से ही।

इसे ही स्वयंभू अर्थात् अभिन्न षट्कारक कहा जाता है। तात्पर्य यह है कि आत्मा ने, आत्मा को, आत्मा के द्वारा, आत्मा के लिए, आत्मा में से, आत्मा के आधार से केवलज्ञान प्राप्त किया है; अत: वह स्वयंभू है।

लोक में जो षट्कारक प्रसिद्ध हैं, वे भिन्न-भिन्न रूप में ही प्रसिद्ध हैं। कुम्हार कर्त्ता है; घड़ा कर्म है; चक्र, चीवर, दण्ड इत्यादि करण हैं; जल भरने के काम आता है, पानी पीने के लिए दिया जाता है, मिट्टी में से घड़ा आया है, वह घड़ा चक्र या जमीन के आधार से बनाया गया है; ये संप्रदान, अपादान एवं अधिकरण भी भिन्न-भिन्न ही प्रसिद्ध हैं; परन्तु यहाँ यह कहा जा रहा है कि षट्कारक पृथक्-पृथक् नहीं है; क्योंकि निश्चय षट्कारक अपने में ही होते हैं, अभिन्न ही होते हैं।

भगवान कहते हैं कि जो सर्वज्ञता हमें प्राप्त हुई है, जो अनंत सुख हमें प्राप्त हुआ है; वह पर के सहयोग से प्राप्त नहीं हुआ है; अपितु स्वयं से ही प्राप्त हुआ है ह्न यही इस गाथा का सार है।

**पञ्चास्तिकाय की 62वीं गाथा में यह सिद्ध किया है कि हमारी जो विकारी पर्यायें हैं; उसमें भी हम स्वयंभू हैं, वे स्वयं से ही उत्पन्न हुई हैं, उन्हें स्वयं ने ही उत्पन्न किया है; कर्म का उदय तो उसमें निमित्तमात्र है। जिसप्रकार सम्यग्दर्शनादि की प्राप्ति में देशनालब्धि मात्र निमित्त है; उसीप्रकार यहाँ कर्म का उदय भी मात्र निमित्त ही है।**

यह जाननेवाला आत्मा यदि शुद्धोपयोगी हो तो उसे अतीन्द्रियज्ञान और अतीन्द्रिय-सुख की प्राप्ति होती है और यदि शुभोपयोगी हो तो उसे स्वर्गसुख की प्राप्ति होती है ह्न ऐसा कहकर आचार्यदेव ने यहाँ आगे आनेवाले चार अधिकारों के बीज डाल दिये हैं।

सर्वप्रथम शुद्धोपयोगाधिकार। इसके फल में जो अतीन्द्रियज्ञान प्राप्त होता है, उसका वर्णन जिसमें है; वह अतीन्द्रियज्ञानाधिकार; तथा इसी के फल में जो अतीन्द्रिय सुख प्राप्त होता है; उसका वर्णन करनेवाला अतीन्द्रियसुखाधिकार; जिससे स्वर्गसुख मिलता है ह्न ऐसा शुभपरिणामाधिकार। इसप्रकार इस ज्ञानतत्त्वप्रज्ञापन महाधिकार में आचार्यदेव ने उक्त चार अधिकार बनाए हैं।

**अपने आत्मा को स्वयं देखने-जानने का नाम ही शुद्धोपयोग है। जिसने देखा वह भी आत्मा है, जिसे देखा वह भी आत्मा है, इसमें पर का रंचमात्र भी कर्तृत्व नहीं है; अत: यह आत्मा स्वयंभू है।**

भगवान को प्राप्त जो अनंतज्ञान एवं अनंतसुख है; वह कैसा है, कबतक रहेगा ? यह बात आचार्यदेव विरोधाभास अलंकार के रूप में इसप्रकार प्रस्तुत करते हैं ह्न

**भंगविहूणो य भवो संभवपरिवज्जिदो विणासो हि।**
**विज्जदि तस्सेव पुणो ठिदिसंभवणाससमवाओ ।।17।।**

( हरिगीत )

**यद्यपि उत्पाद बिन व्यय व्यय बिना उत्पाद है।**
**तथापी उत्पादव्ययथिति का सहज समवाय है ।।17।।**

यद्यपि उन भगवान के विनाश रहित उत्पाद तथा उत्पाद रहित विनाश है; तथापि उनके ध्रौव्य, विनाश और उत्पाद की एक साथ विद्यमानता भी है।

हे भगवान ! तुमने ऐसा उत्पाद किया कि जिसका कभी नाश नहीं होगा और तुमने ऐसा नाश किया कि जिसका कभी उत्पाद नहीं होगा। **(क्रमश:)**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

## डॉ. भारिल्ल का 2004 में विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। अमेरिका की यह उनकी 21 वीं विदेश यात्रा है। उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्नस्थानों पर रहते हों, वे उन्हें सूचित कर दें। उनकी सुविधा के लिए वहाँ के फोन एवं फैक्स नम्बर दिये जा रहे हैं, जहाँ डॉ. भारिल्ल ठहरेंगे।

| क्र. | शहर | सम्पर्क-सूत्र | दिनांक |
|---|---|---|---|
| 1. | शिकागो | निरंजन शाह 847-330-1088<br>डॉ. विपिन भायाणी (घर) 815-939-0056<br>(ऑ.) 815-939-3190<br>(फै.) 815-939-3159 | 28 मई से 2 जून |
| 2. | वाशिंगटन | नरेन्द्र जैन (घर) 703-426-4004<br>(फै.) 703-321-7744<br>E-mail : jainnarendra@hotmail | 3 से 8 जून |
| 3. | मियामी | महेन्द्र शाह (घर) 305-595-3833<br>(ऑ.)305-371-2149<br>E-mail : bhitap@bellsouth.net | 9 से 13 जून |
| 4. | पिट्सबर्ग | शान्तिलाल मोहनोत 724-325-2058<br>E-mail : sohumshanti@yahoo.com | 14 से 19 जून |
| 5. | अटलांटा | राजू शाह (घर) 770-495-7911<br>(ऑ.)404-525-8700, 404-786-1791 | 20 से 24 जून |
| 6. | लॉस एंजिल्स | नरेश पालकीवाला (घर) 562-404-1729<br>(ऑ.) 626-814-8425 (एक्स.8725) | 25 से 30 जून |
| 7. | सान-फ्रांसिस्को | हिम्मत डगली (घर) 510-745-7468<br>अशोक सेठी (घर) 408-517-0975<br>अमरिश सेठी (घर) 408-732-4839 | 1 से 4 जुलाई |
| 8. | सियेटल | प्रकाश जैन (घर) 425-881-6143<br>(ऑ.)425-707-5308<br>E-mail : pjain@microsoft.com | 5 से 11 जुलाई |
| 9. | क्लीवलैंड | कुशल बैद (घर) 440-339-9519<br>E-mail : kushalbaid@att.net | 12 से 18 जुलाई |
| 10. | डलास | अतुल खारा (घर) 972-867-6535<br>(ऑ.)972-424-4902(फै.)972-424-0680<br>E-mail : insty@verizon.net | 19 से 24 जुलाई |
| 11. | लंदन | दिनकर शाह<br>E-mail : dinder_shah@yahoo.co.uk<br>भीमजीभाई शाह (घर) 192-383-6186<br>E-mail : bhimji@hevika.com | 26 जुलाई से 1 अगस्त |

### डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

| | | |
|---|---|---|
| 10 से 11 अप्रैल, 2004 | दिल्ली | गुरुदेवश्री जयन्ती |
| 12 से 14 अप्रैल, 2004 | दिल्ली | विद्वत्परिषद मीटिंग व अधिवेशन |
| 17 से 21 अप्रैल, 2004 | देवलाली | गुरुदेवश्री जयन्ती |
| 04 से 8 मई, 2004 | कोटा | पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव |
| 09 से 26 मई, 2004 | देवलाली | प्रशिक्षण-शिविर |
| 27 मई से 25 जुलाई, 2004 | अमेरिका | धर्म प्रचारार्थ |
| 26 जुलाई से 1 अगस्त, 2004 | लंदन | धर्म-प्रचारार्थ |
| 08 से 17 अगस्त, 2004 | जयपुर | शिक्षण-शिविर |

## पण्डित अभयकुमारजी का विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की तरह ही उनके शिष्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा भी धर्म प्रचारार्थ दिनांक 17 जून से 18 जुलाई तक अमेरिका जा रहे हैं। उनका वहाँ का कार्यक्रम इसप्रकार है ह्न दिनांक 17 जून से 22 जून तक डलास, 23 जून से 30 जून सियेटल, 1 जुलाई से 5 जुलाई तक सान-फ्रांसिस्को, 6 जुलाई से 11 जुलाई तक मियामी, 12 जुलाई से 18 जुलाई तक वाशिंगटन । ज्ञातव्य है कि अमेरिका प्रवास के दौरान जिन स्थानों पर डॉ.भारिल्ल ठहरेंगे, वाशिंगटन को छोड़कर उन्हीं स्थानों पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री भी ठहरेंगे। वाशिंगटन में पण्डित अभयकुमारजी श्री रजनीभाई गोसालिया के यहाँ ठहरेंगे उनका नं.301-464-5947 है।

## ब्र. कैलाशचन्दजी अचल द्वारा धर्म प्रभावना

**कोटा (राज.) :** यहाँ फाल्गुन माह की अष्टान्हिका के अवसर पर पधारे ब्र. कैलाशचन्दजी अचल द्वारा पर्व के बाद भी प्रातः, दोपहर, सायंकाल विविध विषयों पर प्रवचनों के माध्यम से धर्म प्रभावना हुई। ज्ञातव्य है कि इसके पूर्व आपके द्वारा 1 माह तक नागपुर में तथा टीकमगढ़ में भी प्रवचन, कक्षा, तत्त्वचर्चा आदि के माध्यम से धर्मप्रभावना की गई।

## श्री समयसार शिविर सानन्द सम्पन्न

**मंगलायतन (अलीगढ़):** यहाँ अष्टाह्निका पर्व के शुभअवसर पर दिनांक 2 मार्च से 7 मार्च 2004 तक श्री समयसार शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रतिदिन ग्रन्थाधिराज समयसार के आधार से कक्षा, प्रवचन, प्रश्नमंच एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

पूज्य गुरुदेवश्री के सी.डी.प्रवचन भी समयसार ग्रन्थ पर ही हुए।

इस अवसर पर पण्डित कैलाशचन्दजी जैन अलीगढ़, ब्र.जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, पण्डित खेमराजजी जैन इन्दौर, पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित मनोहरजी मारवडकर नागपुर, ब्र. विनोदजी खेकड़ा, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया,पण्डित राकेशजी शास्त्री लोनी, पण्डित अजीतजी अलवर, पण्डित पदमचन्दजी आगरा, पण्डित अनीलजी शास्त्री भिण्ड, श्रीमती स्वर्णलताजी जैन नागपुर आदि के प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ सम्पूर्ण साधर्मी जनों को प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त मंगलायतन के छात्रों द्वारा गोष्ठीयों का आयोजन किया गया।

**जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) अप्रैल (प्रथम) 2004**

**J. P.C. 3779/02/2003-05**

**प्रति,**

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास ❊ **पं. जितेन्द्र वि.राठी शास्त्री**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

*यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -*
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
**फोन :** (0141) 2705581, 2707458
**तार :** त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127